Review Of Research
Vol.2, Issue. 8, May . 2013
ISSN:-2249-894X
Available online at www.lbp.world

ORIGINAL ARTICLE

धर्म में रूढ़िवाद एवं अंधविश्वास : एक अध्ययन

विमल कुमार
बी0 ए0, एम0 ए0 (हिन्दी)
शोध छात्र , ल0 ना0 मि0 विश्वद्यिालय, दरभंगा.

भूमिका–

संस्कृति का महत्त्वपूर्ण आयाम धर्म है और धर्म में रूढ़िवाद अंध–विश्वास, अंधभक्ति तथा भेड़िया धसान की प्रवृत्ति कायम हैं। उन्होंने समाज को धर्म की मौलिक मान्यताओं से दूर अंधविश्वासों एवं कर्मकाण्डों में डूबा पाया। धार्मिक अंधविश्वास के कारण अपनी माता के शव के पाँव में कील ठोकते हुए उन्होंने देखा था– ''कहा जाता था जो माँ छोटे–बच्चे को छोड़कर मरती है, वह चुडैल होकर फिर बच्चे को लेने आती है। उसकी रोक यह समझी जाती थी कि मुर्दे के दोनों पैरों को इकट्ठा कर कील ठोक दी जाय और घर से शमषान तक सरसों के दानें छीट दीये जायें। कील के कारण चल न सकेगी और यदि, घिसक–घुसक कर चली भी तो सरसों के सारे दाने चुन लेने के बाद ही वह आ पायेगी'' उतने दाने वह वेचारी कैसे चुनेगी? अतः बच्चा निरापद रहेगा।

जब–जब मुझे यह याद आता है कि मेरी मरी हुई माँ के पौरों को इकट्ठा कर एक लम्बी कील ठोक दी गई थी; अपने समाज पर वह गुस्सा आता है, जिसकी कोई सीमा नहीं। जहाँ माँ का, मातृत्व का, सन्तान प्रेम का ऐसा अपमान हो, निरादर हो, उस समाज को जहन्नुम में जाना चाहिए।

बेनीपुर के रेखाचित्र और ग्रामीण संस्कृति का प्रतिनिधित्व

बेनीपुर के रेखाचित्र पूर्ण ग्रामीण संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है। धार्मिक विद्वत समाज को बाँटता रहा है। आपस में फूट डालता रहा है और भाई–भाई की गर्दन कटती रही है। बेनीपुरी का सुमान खाँ इसी विद्वेष को समाप्त करना चाहता है; जिसमें हिन्दू और मुसलमान दोनों के साथ दिया है। हिन्दू हो या मुस्लिम हिन्दू के लिए मन्दिर आवष्यक है तो मुसलमानों के लिए मस्जिद। क्योंकि मंदिर मस्जिद के माध्यम से ही ईष्वर और अल्लाह की इबादत मुख्य रूप से होती हैः– '' सुभान दादा का एक अरमान था, मस्जिद बनाने का। मेरे मामा का मंदिर उन्होंने ही बनाया था। उन दिनों वह साधारण राज थे। लेकिन तो भी कहा करते थे.....अल्लाह ने चाहा तो मैं भी एक मस्जिद जरूर बनवाऊँगा.....

जिस दिन मस्जिद तैयार हुई; सुभान दादा ने जवार भर के प्रतिष्ठित लोगों को न्योता दिया था। जुमा का दिन था। जितने मुसलमान थे सबने उसमें नमाज पढ़ी थी। जितने हिन्दू आये थे, उनके सत्कार के लिए दादा ने हिन्दू हलवाई रखकर तरह–तरह की मिठाइयाँ बनवायी थी। पान, इलायची का प्रबन्ध किया था। अब तक भी लोग उस मस्जिद के उद्घाटन के दिन की मेहमानदारी भूलें नहीं है।

समाज में मनौती मानने की प्रथा आज भी कायम है, नौकरी से लेकर पुत्र की प्राप्ति तक के लिए भी मनौती मानी जाती है। मनौती पूर्ण होने पर उनके प्रति श्रद्धा निवेदित की जाती है। बेनीपुरी की नानी ने यही श्रद्धा निम्न रूप में निवेदित की है– ''नानी ने कहा, 'सबेरे नहा खा लो, आज तुम्हें हुसैन साहब के पैक में जाना होगी सुभान खाँ आते ही होंगे।

जिन कितने देवताओं की मनौती के बाद माँ ने मुझे प्राप्त किया था उनमें एक हुसैन साहब भी थे। नौ साल की उम्र तक, तब तक जनेऊ नहीं हो गई थी; मुहर्रम के दिन मुसलमान बच्चों की तरह मुझे भी ताजिए के चारों ओर रंगीन छड़ी लेकर कूदना पड़ा है और गले में गंडे पहनने पड़े हैं।''

भौतिकवादी युग में भी अंधविश्वास है। जब तक धर्म है तब तक अंध विश्वास भी रहेगा! गंडा और ताबीज से रोग की ही मुक्ति नहीं, धन की भी प्राप्ति होती है। यह अंधविश्वास ग्रामीण संस्कृति का अत्याज्य और अटूट अंग है। बेनीपुरी की पत्नी को विश्वास है कि गंडा–ताबीज पहल नेने से उनके पति

की जेल से रिहाई हो जायेगी। इसलिए जब लेखक की पत्नी उनसे मिलने जाती है तब गंडा–ताबीज देना नहीं भूलती– ''अभी उस दिन मेरी रानी मेरे दो वर्ष जेल में जाने के बाद उतने लम्बे अरसे तक राह देखती–देखती आखिर मुझसे मिलने गया सेन्ट्रल जेल में आई थी।

ठतने दिनों की बिछुड़न के बाद मिलने पर जो सबसे पहली चीज उसने मेरे हाथों पर रखी, वे थे रेषम और कुछ सूत के अजीबों गरीब ढ़ंग से लिपटे–लिपटाएं डोरे, बद्धियाँ गंडे आदि, वह सूरत देवता के हैं, यह अनंत देवता के, यह गाय देवता के, यों ही गिनती–गिनती। आखिर में बोली– ''ये हुसैन साहब के गंडे हैं। आपको मेरी कसम, इन्हें जरूर ही पहल लीजिएगा।''

धर्म को अफीम कहा गया है, जिसके नशा में सारा समाज क्षत विक्षत हो जाता है। साम्प्रदायिक सौहाद्र बिगाड़ना हो तो धर्म की दुहाई दीजिये, देखिए देखते–देखते हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे के खून के प्यासे हो उठते हैं। बेनीपुरी ने लिखा है – ''शहरों की यह बीमारी धीरे–धीरे देहात में घुसने लगी। गाय और बाजे के नाम पर तकरारें होने लगी। जो जिंदगी भर कसाईखानों के लिए अपनी गायें बेचते रहे, वे ही एक दिन किसी एक गाय के कटने का नाम सुनकर ही कितने इंसानों के गले काटने को तैयार होने लगे। जिनके शादी–ब्याह, पर्व–त्योहार बिना बाजे के नहीं होते, जो मुहर्रम की गमी के दिन भी बाजे–गाजों की धूम किए रहते, अब वे ही अपनी मस्जिद के सामने से गुजरते हुए एक मिनट के बाजे पर खून की नदियाँ बहाने को उतारू हो जाते।''

समाजिक सौहार्द्र को बिगाड़ने में पंड़ितों और मुल्लाओं की भूमिका अहम होती है– कुछ पंडितों की बन आई, कुछ मुल्लाओं की चलती बनी। संगठन और तंजीम के नाम पर फूट और कलह के बीज बोए जाने लगे। लाठियाँ उछली; छुरे निकले। खोपड़ियाँ फूटी; अंतड़ियाँ बाहर आई। कितने नौजवान मरे, कितने घर फूंके। बाकी बच गए खेत–खलिहान, से अंग्रेजी अदालत के खर्चे में पीछे कुर्क हुए।

लेकिन अब गाँव भी बदल गया है। छूआछूत की भावना और पेषे से बन्धी जाति लगभग समाप्त हो चुकी है –

अब तो ऐसे भी गाँव हैं, जहाँ के हिन्दू और मुसलमानों के हाथ से सौदे भी नहीं खरीदते। अब हिन्दू चूड़ी हारिनें हैं, हिन्दू दजी हैं।

यहाँ की संस्कृति की गांगी–यमुनी कही जाती है। हिन्दू और मुसलमानों की मिश्रित संस्कृति। रामवृक्ष बेनीपुरी ने लिखा है – ''उन दिनों हिन्दू–मुसलमानों की तनातनी नहीं थी। दोनों दूध–चीनी की तरह घुले–मिले थे। हिन्दू की होली में मुसलमानों की दाढ़ी रंगी होती; मुसलमानों की ताजिए में हिन्दू के कंधे लगे होते।''

हिन्दू और मुसलमान को कौन कहे अब तो हिन्दू–हिन्दू में बिखराव हैं, जातिभेद है–

यह अजीब है हमारी बस्ती! चरों ओर राजपूतों और अहीरों का ठट्ठ राजपूतों में अगर राम की शान तो ग्वालों में कृष्ण की यादवी आन–बान। दोनों कौमो में जैसे खानदारी बैर चला आ रहा है। छोटी–छोटी बात पर भी तनाव हो जाता है। मूँछे कड़ी हो उठती, आँखें लाल हो जाती और लाठियाँ चलकर रहती। दोनों कौमें दो गिरोह की हैसियत से लड़ती थी।

भगवान का नाम लिये बगैर कोई काम नहीं होता। यह भारतीय गाँव की संस्कृति है। भगवान पर लोगों की अटूट श्रद्धा और विष्वास होता है। व्यंग्यात्मक लहजे में बेनीपुरी ने लिखा है –

''भगवान की मरजी, ''कहकर मंगर जिसके नाम पर अपनी मुसीबतों को बिसर जाने का प्रयत्न करता रहा, उस भगवान ने परसाल उसकी और दुर्गति कर दी। उसे जोरों से अध कपारी उठी। भकोलिया ने उसकी चिल्लाहट से पसीज किसी दया की मूर्ति से दालचीनी मांग लाई और उसे बकरी के दूध में पीसकर उसका लेप उसके लालट पर कर दिया। बाईं पुटपुटी पर और आँख पर भी लगा दे। मंगर ने लेप की पहली ठंढ़ाई अनुभव कर कहा। भकोलिया हुक्म बजा लाई। लेकिन यह क्या? जहाँ जहाँ लेप था। वहाँ अजीब जलन शुरू हुई। जलन जख्म में बदली और जख्म ने उसकी एक आँख लेली।''

रामवृक्ष बेनीपुरी का 'गेहूँ का गुलाब' एक नई संस्कृति की खोज करता है। उन्होंने उसकी भूमिका में लिखा है – यह पुस्तक है और आन्दोलन भी।'' गेहूँ को लेखक शारीरिक भूख को बुझानेवाला और गुलाब को मानसिक तृप्ति प्रदायक मानता है। भारतीय संस्कृति के अमूल्य तत्त्वों में निहित शिवतत्व और सौंदर्य की अद्भूत समंजन शक्ति को उद्घाटित करने का प्रयत्न उसमें है।

''भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में 'गेहूँ और गुलाब' के प्रतीकों की बदलती हुई विभिन्न स्थितियों का अभिज्ञान कराके अतिवादी स्थितियों से उत्पन्न भयंकर संघर्षों, गृहयुद्धों और महाभारतों की भूमिकाओं का उद्घाटन एवं विज्ञान द्वारा सीधे–सीधे इस समस्या का समाधान खोजकर, मानव को शोषण मुक्त संस्कृति के बीच पल्लवित और विकसित देखने की आकांक्षा इस रेखाचित्र का उद्देश्य है।''

सृष्टि के आरंभ में पशु और मनुष्य में कोई भेद नहीं था। पर समय के परिवर्तन के साथ मनुष्य के मानस का विकास हुआ; वह भोजन के अतिरिक्त मानसिक तृप्ति की कामना करने लगा। पर पशु में इस तरह की इच्छा जागृत नहीं हुई। फलतः इसी सांस्कृतिक विकास के कारण मनुष्य पशु से बिल्कुल भिन्न हो गया। अब उसके पेट में भूख खाँव–खाँव कर रही थी, तब भी उसकी आँखें गुलाब पर टंगी थी। टंकी थी।''

संस्कृति में नर और नारायण का तादात्म्य है। नर गोचर है, नारायण अगोचर। जिनके हाथ में सृष्टि का सभी सूत्र है : धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति में नारायण की ही मर्जी होती है। उसी तरह सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक क्षेत्र में भी उन्हीं का चलता है। पुरूष और परमेष्वर में बेनीपुरी ने इसका उद्घाटन निम्न रूप से किया है – ''मानव–कल्पना का ही रहस्यवादी प्रतीक है, भगवान की कल्पना। विषुद्ध भगवान का अर्थ है विषुद्ध मानव।

स्वप्न–भगवान का अर्थ है – स्वप्न मानव।

सर्वसत्ताधारी भगवान का वह निरंकुष राजा है, जो प्रजा का उत्पीड़न और शोषण करता है। सर्वज्ञ भगवान वह पुरोहित है जो जनता के अज्ञान पर अपना व्यापार चलाता है। राजनीति में भगवान का काम षडयंत्र करना है; सम्पत्ति में भगवान का काम अधिक लोगों को दरिद्र रखना है। मानव ने भगवान को अपने से महान नहीं बनाया।

'फूल सूँघनी' के माध्यम से लेखक ने सांस्कृतिक जगत के वैभव और उसका आस्वादन लेनेवालों का चित्र दिया है। फूलों को नोंच–नोंच कर उसकी पंखुरियों को ढ़ेर लगा देनेवाली यह चिड़िया, पेट भर कर फुर्र से उड़ जाती है और लेखक देखते रह जाते हैं।

'हर सिंगार' में लेखक की सांस्कृतिक संवेदना प्रकट होती। तब, आँगन से जब तक आने वाले हौले टप–टप शब्द से मेरे रोये खड़े हो जाते हैं। इसका स्पष्टीकरण लेखक बाद में करते हैं – ''समाज में अपना सर्वस्व दे देने वाली नारी की उपेक्षा तथा अवहेलना। वे उन भारतीय युवतियों की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करते हैं जो पूर्ण विकसित होने से पूर्व ही माता बनकर अपने सर्वस्व को संतान के लिए सुरक्षित कर देती है और प्रकृति प्रदत्त सौंदर्य एवं यौवन का मूल्य भी नहीं जान पाती है। जैसे वे समर्पित होने के लिए ही उत्पनन हुई है और हरसिंगार की तरह सूर्योदय से पहले ही अपना सर्वस्व लुटा चुकती है।''

रामवृक्ष बेनीपुरी ने 'गेहूँ और गुलाब' में जिस नई संस्कृति का चित्रण किया है उसका स्वरूप स्पष्ट करते हुए बेनीपुरी ने लिखा है – ''गत पचास वर्षों के राजनीतिक–आर्थिक संघर्षों ने हमारे दिमाग को इतना भोथरा बना दिया है कि संस्कृति की सुकुमार दुनिया हमारी पथराई आँखों के सामने आकर भी नहीं आ पाती।

गेहूँ हमारी आँखों पर इस कदर छाया हुआ है कि गुलाब को हम देखकर भी नहीं देख पाते। गेहूँ के सवाल को हल कीजिए और जरूर हल कीजिए, किन्तु किस लिए। सदा याद रखिए, आदमी सिर्फ चारा या दाना खाने वाला जानवर नहीं है।

समाज की सारी साधनाओं की परिणति उसकी संस्कृति में है। जड़ में खाद–पानी दीजिए, तनों की डालियों की रक्षा कीजिए, किन्तु नजर फूल पर।

फूल पर, गुलाब पर, संस्कृति पर।

नये समाज की वह हर योजना अधूरी है, जिसमें नई संस्कृति के स्थान नहीं है।

निष्कर्ष :

जबतक मनुष्य के जीवन में 'गेहूँ और गुलाब' का संतुलन रहा, तब तक उसका जीवन सुखी रहा, आनंदमय रहा। वह काम करते हुए गाता था और गाते हुए काम करता था। समय बदला 'गेहूँ और गुलाब' के बीच संतुलन कायम न रह सका। संतुलन का धागा टूट गया। परिणाम यह हुआ कि मनुश्य गेहूँ के पीछे दौड़ा, मानव पेट की ज्वाला शांत करनेवाला एक मषीन बन गया। इधर गुलाब बिलासिता और भ्रष्टाचार का प्रतीक बन गया। तभी से अषांति आ गयी। समाज में संघर्ष शुरू हो गया। इसलिए वे लिखते हैं – ''अहा, कैसा वह शुभ दिन होगा; जब हम स्थूल शारीरिक आवष्यकताओं की जंजीरे तोड़कर सूक्ष्म मानस जगत का नया लोक बसायेंगे।''

संदर्भ सूची :

1. सं0 दिवाकर – श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी, संस्मरण और श्रद्धांजलि, पृ0–23
2. रामवृक्ष बेनीपुरी – 'माटी की मूरतें', पृ0–115 (पेपर वैक्स)
3. वही, पृ0–112
4. वही, पृ0–118 (सुभान खाँ)
5. वही, पृ0–115
6. वही, पृ0–20 (रजिया)
7. वही, पृ0–26 (बलदेव सिंह)
8. वही, पृ0–29 (बलदेव सिंह)
9. वही, पृ0–49–50 (मंगर)
10. रामवृक्ष बेनीपूरी– गेहूँ और गुलाब भूमिका से
11. डॉ0 मक्खन लाल शर्मा – हिन्दी रेखाचित्र : सिद्धान्त और विकास, पृ0–286
12. रामवृक्ष बेनीपुरी– गेहूँ और गुलाब, पृ0–82
13. वही, पृ0–45
14. वही, पृ0–28
15. मक्खन लाल शर्मा – हिन्दी रेखा चित्र : सिद्धान्त और विकास, पृ0–288–89
16. डॉ0 गजानन चव्हाण – हिन्दी रेखा चित्र : सिद्धान्त और विकास, पृ–288–89
17. रामवृक्ष बेनीपुरी – गेहूँ और गुलाब, पृ0–86